(अव्यक्त इशारे)
रुहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो

1) संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की विशेषता पवित्रता है। प्रवृत्ति में रहते अपवित्रता से निवृत्त रहना, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता के संकल्प से मुक्त रहना - यही विश्व को चैलेन्ज करने का साधन है, यही आप ब्राह्मणों की रूहानी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है।
2) प्युरिटी की रॉयल्टी अर्थात् एकव्रता बनना, (एक बाबा दूसरा न कोई) इस ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पावन बनने के लिए एकव्रता का पाठ पक्का कर लो। वृत्ति में शुभ भावना, शुभ कामना हो, दृष्टि द्वारा हर एक को आत्मिक रूप में वा फरिश्ता रूप में देखो। कर्म द्वारा हर आत्मा को सुख दो और सुख लो। कोई दुःख दे, गाली दे, इनसल्ट करे तो आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ।
3) पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, वह तो फाउण्डेशन है लेकिन साथ में और चार भी हैं। क्रोध और सभी साथी जो हैं, उन महाभूतों का त्याग, साथ-साथ उनके भी जो बाल बच्चे छोटे-छोटे अंश मात्र, वंश मात्र हैं, उनका भी त्याग करो तब कहेंगे प्योरिटी की रूहानी रॉयल्टी धारण की है।
4) पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, सम्पूर्ण पवित्रता आपके जीवन की सबसे बड़े से बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है, इसे धारण कर एवररेडी बनो तो प्रकृति अपना काम शुरू करे। प्युरिटी की पर्सनैलिटी से सम्पन्न रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है।
5) ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है - सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करेगी, और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रॉयल्टी देने से छुड़ायेगी। इसी रॉयल्टी के अनुसार भविष्य रॉयल फैमिली में आ सकेंगे। जैसे शरीर की पर्सनैलिटी देह-भान में लाती है, ऐसे प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही-अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है।
6) जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वांस चलना आवश्यक है। श्वांस नहीं तो जीवन नहीं, ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार पवित्रता है। आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। संगमयुगी प्राप्तियों का आधार और भविष्य में पूज्य - पद पाने का आधार पवित्रता है इसलिए पवित्रता की पर्सनैलिटी को वरदान रूप में धारण करो।
7) यदि वरदाता और वरदानी दोनों का सम्बन्ध समीप और स्नेह के आधार से निरन्तर हो और सदा कम्बाइन्ड रूप में रहो तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। जब अकेले होते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।
8) ब्राह्मणों की लाइफ, जीवन का जीय-दान पवित्रता है। आदि- अनादि स्वरूप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं अनादि- आदि पवित्र आत्मा हूँ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता

की समर्थी आना। स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप आत्मायें निज़ी पवित्र संस्कार वाली हैं। तो निज़ी संस्कारों को इमर्ज कर इस पवित्रता की पर्सनैलिटी को धारण करो।

9) पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है, पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। ऐसी महान चीज़ को अपनाने में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ। यह पवित्रता तो आपके जीवन का वरदान है।

10) आपका स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठ से छूट जायेंगे। पवित्रता वरदान रूप में धारण कर लेंगे।

11) पवित्रता की शक्ति परमपूज्य बनाती है। पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन करते हो। पवित्रता की शक्ति विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बना देती है। आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है। पवित्रता के आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है। इसके महत्व को जानकर पवित्रता के लाइट का क्राउन धारण कर लो।

12) वर्तमान समय के प्रमाण फरिश्ते - पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म होती जाती है। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना ही पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ ब्रह्मा बाप के हर कर्म रुपी कदम पर कदम रखने वाले ब्रह्माचारी बनो।

13) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है। जहाँ पवित्रता है वहाँ दुःख अशान्ति आ नहीं सकती। तो चेक करो सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शान्त स्वरुप में विराजमान रहते हैं? अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है या इस उलझन से परे सुख स्वरूप स्थिति रहती है?

14) रूहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन सम्पूर्ण पवित्रता है। तो अपने से पूछो कि रूहानी रॉयल्टी की झलक और फलक आपके रूप वा चरित्र से हर एक को अनुभव होती है? नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे पर, चलन में वह रूहानी रॉयल्टी दिखाई देती है या साधारण चलन और चेहरा दिखाई देता है ?

15) जैसे दुनिया की रॉयल आत्मायें कभी छोटी-छोटी बातों में, छोटी चीज़ों में अपनी बुद्धि वा समय नहीं देती, देखते भी नहीं देखती, सुनते भी नहीं सुनती, ऐसे आप रूहानी रॉयल आत्मायें किसी भी आत्मा की छोटी-छोटी बातों में, जो रॉयल नहीं हैं उनमें अपनी बुद्धि वा समय नहीं दे सकते। रूहानी रॉयल आत्माओं के मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल भी नहीं निकल सकते।

16) वारिस क्वालिटी प्रत्यक्ष तब होगी जब आप अपनी प्युरिटी की रॉयल्टी में रहेंगे। कहाँ भी हद की आकर्षण में आंख न डूबे। वारिस अर्थात् अधिकारी। तो जो यहाँ सदा अधिकारी

स्टेज पर रहते हैं, कभी भी माया के अधीन नहीं होते, अधिकारीपन के शुभ नशे में रहते, ऐसे अधिकारी स्टेज वाले ही वहाँ भी अधिकारी बनते हैं।

17) जो चैलेन्ज करते हो - सेकण्ड में मुक्ति - जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करो, उसको प्रैक्टिकल में लाने के लिए स्व-परिवर्तन की गति सेकण्ड तक पंहुची है? स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रूहानी रॉयल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हो।

18) प्युरिटी की पर्सनौलिटी के आधार पर ब्रह्मा बाप आदि देव वा पहला प्रिन्स बनें। ऐसे आप भी फालो फादर कर वन नम्बर की पर्सनैलिटी की लिस्ट में आ जाओ क्योंकि ब्राह्मण जन्म के संस्कार ही पवित्र हैं। आपकी श्रेष्ठता वा महानता ही पवित्रता है।

19) प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की पर्सनैलिटी को धारण कर, इस ऊंची पर्सनैलिटी के रूहानी नशे में रहो। अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को स्मृति में रख सदा प्रसन्नचित रहो तो सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे। अशान्त और परेशान आत्मायें आपकी प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न हो जायेंगी।

20) आप ब्राह्मणों जैसी रूहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं है क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनाने वाला ऊंचे ते ऊंचा स्वयं परम आत्मा है। आपकी सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी| इस प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की भी पर्सनैलिटी है - अपनी इस पर्सनैलिटी में सदा स्थित रहो तो सेवा स्वतः होगी।

21) प्रत्यक्षता का सूर्य उदय तब होगा जब पवित्रता की शमा चारों ओर जलायेंगे। जैसे वो शमा ले करके चक्कर लगाते हैं, ऐसे पवित्रता की शमा चारों ओर जगमगा दो तब सब बाप को देख सकेंगे, पहचान सकेंगे। जितनी अचल पवित्रता की शमा होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे और पवित्रता की जयजयकार होगी।

22) श्रेष्ठ कर्मों का फाउन्डेशन है "पवित्रता"। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन मन्सा संकल्प में भी अगर कोई आत्मा के प्रति विशेष लगाव वा झुकाव हो गया, किसी आत्मा की विशेषता पर प्रभावित हो गये या उसके प्रति निगेटिव संकल्प चले, ऐसे बोल वा शब्द निकले जो मर्यादापूर्वक नहीं हैं तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे।

23) इस ईश्वरीय सेवा में बड़े से बड़ा पुण्य है - पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। किसका दुःख लेकर सुख देना, यही सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य का काम है। ऐसे पुण्य करते-करते पुण्यात्मा बन जायेंगे।

24) दुःख अशान्ति की उत्पत्ति अपवित्रता से होती है। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दुःख अशान्ति कहाँ से आई। आप सब पतित-पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित-पावन हो, तो जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं वह स्वयं तो पावन होंगे ही। ऐसी पावन पवित्र आत्माओं

के पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। सबसे बड़े ते बड़ी महानता है ही पावन बनना। आज भी इसी महानता के आगे सभी सिर झुकाते हैं।

25) अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो अपवित्रता और विस्मृति का नाम - निशान समाप्त हो जायेगा। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है, अब इसकी अविद्या होनी चाहिए क्योंकि यह संस्कार व स्वरूप आपका नहीं है बल्कि आपके पूर्व जन्म का था। अभी आप ब्राह्मण हो, ये तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप है, ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरे के संस्कार अनुभव होना, इसको कहा जाता है - न्यारा और प्यारा।

26) जैसे देह और देही दोनों अलग-अलग दो वस्तुएं हैं, लेकिन अज्ञान-वश दोनों को मिला दिया है; मेरे को मैं समझ लिया है और इसी गलती के कारण इतनी परेशानी, दुःख और अशान्ति प्राप्त की है। ऐसे ही यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो ब्राह्मणपन के नहीं, शूद्रपन के हैं, इनको भी मेरा समझने से माया के वश हो जाते हो और फिर परेशान होते हो।

27) बाप-समान बनना है वा बाप के समीप जाना है तो अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार न करे। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: स्वरूप में हो। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे नहीं आओ।

28) आप सबकी पहली प्रवृत्ति है अपनी देह की प्रवृत्ति, फिर है देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति। तो पहली प्रवृत्ति - देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद क हो, चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र नहीं बना सकेंगे। तो पहले अपने आपसे पूछो कि अपने शरीर रूपी घर को अर्थात् संकल्पों को, बुद्धि को, नयनों को और मुख को रुहानी अर्थात् पवित्र बनाया है? ऐसी पवित्र आत्मायें ही महान हैं।

29) पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है। जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वांस चलना आवश्यक है। श्वांस नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउन्डेशन पवित्रता है।

30) जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है, अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलाती है। लेकिन यदि एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र न रहे तब कहेंगे पवित्रता की पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने वाले।

31) विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। रूहानी पर्सनैलिटी वाली आत्मायें अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गंवाते, सफल करते हैं। ऐसी पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन- बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं।